आपातकाल में सृजन फुलवारी

सोनाली तिवारी (दीपशिखा)

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सोनाली तिवारी (दीपशिखा)

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-220-3

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र-संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय-15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण-2020, सोनाली तिवारी (दीपशिखा)

मूल्य-50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY SONALI TIWARI (DEEPSHIKHA)

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	विलीन	6
2.	गलियों से भागेंगे, घरों में खो जाएँगे	7
3.	कुर्बानी किसकी है	8
4.	जीवन के संघर्ष में तपकर	9
5.	योग की महिमा	10
6.	प्रेम लिखना सिखाता है	11
7.	प्रातः बेला	12
8.	स्वयं से स्वयं की पहचान बनाओ	13
9.	भारतीय संस्कृति	14
10.	मिलन	15
11.	हो गई कविता जवान	16
12.	मत काटो	17
13.	अपावन	18
14.	दिल-जला	19
15.	गुमशुदा ज़िन्दगी	20
16.	डूबती संस्कृति	21

विलीन

हो गई विलीन संस्कृतियाँ,
संदेह में हैं आकृतियाँ।

करती उर कंपित विरह ये वेला,
शत्रु आया कोई नवेला।

घमासान मच गई धरा पर,
डरना नहीं, जन-जन डरा पर।

क्या होगा जाने ना आर्य,
रुके पड़े हैं सारे कार्य।

आई आपदा यह युगीन,
हो जनसाधारण या कुलीन।

मानुष नित नए ब्रह्मलीन,
कर रहा काल क्रीड़ा विलीन।

गलियों से भागेंगे, घरों में खो जाएँगे

कभी सोचा भी नहीं था, हम ऐसे हो जाएँगे।
गलियों से भागेंगे, घरों में खो जाएँगे।

जिसका अंदाजा ना था, वह वक्त भी आ गया।
नजारा हर तरफ, महामारी कोरोना का छा गया।

यह तो कुछ भी नहीं, आगे और भी पाएँगे।
नहीं सुधरे तो, धरती पर ना रह पाएँगे।

बच गए कोरोना से तो, अम्फान में डूब जाएँगे,
जो बीज बोया है तो, फल जरूर पाएँगे।

बेशुमार कमा दौलत, बस देखते रह जाएँगे।
गलियों से भागेंगे, घरों में खो जाएँगे।

कुर्बानी किसकी है

दर्द बताता है कहानी किसकी है,
बयाँ करता है सागर रवानी किसकी है।

जख़्म देकर छुपा लो चाहे कितना भी,
वक्त बताता है निशानी किसकी है।

गुपचुप गुमनाम भला कैसे रह पाओगे,
शोर करता है जमाना नादानी किसकी है।

जवां दिल मन से रहो तन से नहीं,
जो ढल ना गई हो जवानी किसकी है।

करते रहो कर्म झूठा बखान न करो,
तुम्हारी सफलता में कुर्बानी किसकी है।

जीवन के संघर्ष में तपकर

जीवन के संघर्ष में तपकर,
कवि उभरते और निखरकर।

नित नई विपदायें पारण कर,
साहित्य उन्नति और उभरकर।

क्षण सुख-दुख भरपूर निथरकर,
चले चाल लेखनी इतरकर।

बड़े-बड़े दायित्व से थककर,
जाते नहीं कहीं मुकरकर।

जीवन के संघर्ष में तपकर,
कवि उभरते और निखरकर।

योग की महिमा

दिव्य यामिनी तमस हरा,
भोर भई भानु सरताज खरा।

मन मृदंग बन मचल उठा,
निखर गई यह अचल धरा।

निर्मल धार बही प्राणों की,
ग्रहण करो वायु उत्थानों की।

चाहे हो ज्वर या कोई पीड़ा,
आज उठा लो योग का वीणा।

ऋषि परम्परा कर लो धारण,
रोग-द्वेष सब होगा पारण।

तुलसी, सूर, कवि रहीमा,
बता गए सब योग की महिमा।

प्रेम लिखना सिखाता है

हम सबने आज़माया है,
प्रेम लिखना सिखाता है।

दया, त्याग, स्नेह,
जग को जगमगाता है।

विसंगतियां और तर्क से,
विश्वास डगमगाता है।

कर समाहित कलम में स्याही को,
भेंट कर कागज से, प्रेम ही लिख पाता है।

प्रातः बेला

रवि सहस्र किरणों संग दमके,
प्रातःकाल कुछ ऐसे चमके।

नववधू पायल चूड़ी खनके,
गीत सुहावन गावें मनके।

क्रीडा करें बाल सब जमके,
हो पवित्र सब उर्वी तबक़े।

प्रातः बेला ज्ञान विधान,
होते सिद्ध सब अनुसन्धान।

स्वयं से स्वयं की पहचान बनाओ

सत्य, सनातन, सुमधुर, सुरभित,
सतत सुभाषित साज सजाओ।

दान-दक्षिणा दीन को देकर,
दनुज देश से कर दूर दिखाओ।

ना हो नाश नर नैतिकता का,
निराश्रितों को निराशा ना नपाओ।

अलौकिक, अद्भुत, अपूर्व आर्यावर्त,
अक्षुण्ण आगम अमरत्व उपस्थित।

ना अहं की जीत कराओ,
स्वयं से स्वयं की पहचान बनाओ।

भारतीय संस्कृति

सस्वर "स्वागत" सुर पुर गावें,
लीलाधर प्रभु भारत पधारें।

"संस्कार" का ध्वज लहरावें,
राम, लखन, सीता अवतारें।

"विद्या" उद्गम मार्ग बतावें,
ध्वंस दैत्य वंश दशानन तारें।

विश्व "विचार" विज्ञान बांचवें,
धर्म सनातन से सब हारें।

नाहिं "दिखावा" निज हिय भावे,
देवो भव अतिथि सत्कारें।

मिलन

मन मकरंद मिलन ही माँगे।
धूमिल से कुछ स्वप्न है तागे।

अधीर, आसमय सोए न जागे।
बस उत्कंठ सा, प्रियवर मांगे।

तजकर सुख, दुःख ही मन भावे।
मन चकोर, कहीं ठहर ना पावे।

हो गई कविता जवान

नन्हीं कविता ने भरी, कवि उर से उड़ान।
तरुणाई की अवधि में, बन गई एक पहचान।।

बनी कवि की आत्मा, और साहित्य की जान।
जनमानस ने जब सुनी हो गई कविता जवान।।

नैनो के जल सी वो पावन, बरसे वो जैसे हो सावन।
आनन-फानन में लिखी, उसे ना वक्त का ज्ञान।।

यह शब्द ही हैं जिनसे होता, है पतन उत्थान।
पक्षी के कलरव से जन्मी सृष्टि के कण-कण से पनपी।।

महक में फूलों से भी आगे, हरि चरणों के समान।
जनमानस ने जब सुनी हो गई कविता जवान।।

कभी किरण वो, कभी चमन वो, युद्ध के शंखनाद के
ध्वज सी।
जीत के पावन अक्षर जैसी वह ब्रह्मांड के नक्षत्रों सी।।

कभी बनी वो सांत्वना, कभी मातृभूमि का बखान।
जनमानस ने जब सुनी, हो गई कविता जवान।।

मत काटो

मत काटो निज प्राण को, जो जीवन आधार।
पाँव कुठारी मार कर, निज पर होत प्रहार।।

नीड़ गिरा कर और का, गढ़ते अपना संसार।
ले डूबेगा तुम्हें एक दिन, तेरा यही अपकार।।

वे आखेटक हैं तुमसे भले, रही तुममें ही खोर।
बख्शें वो घर कुटुम्ब को, तुम ही स्वयं के चोर।।

मत काटो वन धन उपज, मंडप मनहि ना भाय।
काल पालना बन रहा , वन कटे सब दुख पाएँ।।

अपावन

कलाबाजों की अदालत में तमाशे हुए,
शामिल वही थे जो हुकुम हाजिर हुए।

कुछ दर्पी कुछ शैतान कुछ जाहिल हुए,
नमूने सारे वधिक माहिर हुए।

शौकीन जलसों के थे, जग जाहिर हुए,
ये वही लोग हैं, जो आज ताहिर हुए।

ना कर पाए हम कुछ, ना कर पाए तुम कुछ,
वह लिखते गए मौत, वही वारिद हुए।

ना कोई दल हावी था, ना कोई धर्म,
उत्पात तो इंसान ने ही किया, यही है मर्म।

गर्मजोशी, हुल्लड़ से भरे दामन हुए,
पवित्र सारे कुल्हड़ अपावन हुए।

दिल-जला

दहलता आया है सदियों से,
दहलाते आए हैं दिलजले।

दिवाला निकाल कर,
दिलवालों का।
दिल जलाकर,
दिलशाद बन जाते हैं।

दुम हिलाते से,
दंभी दनुज कहलाते हैं।
दलालों ने देश के दिल को,
दरकिनार कर दिया।

दिलकश दिल्ली को,
फिर दागदार कर दिया।
दिनों में फिर एक दिन,
यादगार कर दिया।

दबा-कुचला, दबोचा,
दर्द- वार कर दिया।
जाने कब तक चलेगा यह सिलसिला,
देश का दिल-जला।

गुमशुदा ज़िन्दगी

आओ इसे अभिनीत करें,
बन समीर मंद,
खोल कपाट हृदय के बंद,
तन में स्फूर्ति, आनंद भरें।

कलरव सुमधुर,
धानी धरा,
देख शाम सुरभित,
चंचलता उमंग भरें।

अब तक रही है जो,
"गुमशुदा जिन्दगी",
खोजकर उसको,
वीरानगी का अंत करें,
भरकर रंग सारे,
जीवन बसंत करें.....।

डूबती संस्कृति

मलीनता, ग्लानि, हो रही तन हानि,
धन वृद्धि जन हानि।

सुकून तज, कर्म सब फहरा रहे,
निज कीर्ति ध्वज।

आरोग्य दूर, अस्थियाँ चूर, देख ओ अंतर्यामी,
सफलता पाकर भी, मिल रही नाकामी।

दूरगामी ना रही वह दृष्टि मानव की,
बन गई अब यह सृष्टि दानव की।

बचा लो संस्कृति, मिटा लो विकृति,
आ जाओ कोई तो आगे, बन मनु सन्तति।

सरसता, समरसता का जन-जन में भाव जगा,
नई राह दिखा पथिकों को बन "दीपशिखा"।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

सोनाली तिवारी (दीपशिखा)

भारत नगर, कॉन्वेंट स्कूल के पीछे
साँची रोड, रायसेन
जिला-रायसेन (म.प्र)

Email- sonalitiwari723@gmail.com
9993950572

ईश्वर की असीम कृपा है, कि मुझे साहित्य की सेवा करने का मौका मिल रहा है। अपने साहित्य सृजन द्वारा हम आने वाली पीढ़ियों के लिए धरोहर के रूप में हम पर जो बीती व्यथा, प्राप्त हुए आनंद और परिस्थितियों के अनुरूप विकट समस्याओं से लड़ने के अनुभव एवं उत्कर्ष एक मार्गदर्शिका के रूप प्रदान कर सकते हैं। क्योंकि देश काल और वातावरण तो बदलता रहता है परंतु, साहित्य अमिट है। आज देश की कोरोना से लड़ाई में 'अंतरा शब्दशक्ति' की भूमिका सराहनीय है अंतरा के माध्यम से, देश के विभिन्न रचनाकार एवं साहित्यकार अपनी उत्कृष्ट रचनाएँ जन-जन तक पहुँचा रहे हैं एवं यह लड़ाई जीतने का संबल प्रदान कर रहे हैं।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-220-3

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/